Vol 6 Issue 3 Dec 2016

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

Review Of Research

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 3.8014(UIF) Volume - 6 | Issue - 3 | December - 2016

पर्यावरण संरक्षणः स्वच्छ भारत अभियान और गांधी दृष्टिकोण

(एक कदम स्वच्छता की ओरः वाराणसी के विषेश संदर्भ में)

धरवेश कठेरिया[1] , निरंजन कुमार[2] , प्रणव मिश्र[3] , नीरज कुमार सिंह[4]
हिमानी सिंह[5] , अविनाश त्रिपाठी[6] , पदमा वर्मा[7] , शैलेंद्र कुमार पाण्डेय[8]

[1].सहायक प्रोफेसर, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।
[2, 3]. पीएच.डी. शोधार्थी, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।
[4].पूर्व शोध सहायक (परियोजना– आईसीएसएसआर), जनसंचार विभाग,
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।
[5, 6, 7]. विद्यार्थी, एम. फिल. जनसंचार, जनसंचार विभाग,
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।
[8]. विद्यार्थी, एम. फिल. भाषा अध्ययन विभाग,
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

सारांशः

कहा जाता है कि जिस तरह से किसी व्यक्ति की पहचान उसके चेहरे, हाव–भाव, आचार–विचार आदि से होती है ठीक उसी तरह से हम सभी के आसपास के वातावरण की पहचान वहां की स्वच्छता देखकर की जा सकती है। किसी व्यक्ति को बनारस घूमना है तो सबसे ज्यादा कोई चीज प्रभावित करती है वह है शहर की स्वच्छता। वर्तमान सरकार के द्वारा चलाए जा रहे स्वच्छता अभियान का प्रभाव बनारस में भी देखने को मिलता है। प्रभाव हो भी क्यों न क्योंकि बनारस के सांसद नरेंद्र मोदी ही देश के प्रधानमंत्री हैं। शोध में प्राप्त आंकड़ों के अनुसार 79.5 प्रतिशत लोगों का मानना है कि यह अभियान लोगों को जागरूक करने में सफल रहा है। 91 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि स्वच्छ भारत अभियान गांधीजी के सपनों को साकार करने जैसा है। कुछ प्रतिभागी इस अभियान को राजनीतिक रुप से देखते हैं वहीं 74.25 प्रतिशत प्रतिभागी इस अभियान से अपने आस–पास के वातावरण को साफ–सुथरा करने के उद्देश्य से जुड़े हैं। 86.75 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि स्वच्छ भारत अभियान के बाद सामाजिक सदभाव के साथ–साथ स्वच्छता हेतु सामाजिक सहयोग बढ़ा है। आंकड़े यह दर्शाते हैं कि यह अभियान स्वच्छता के साथ–साथ, सामाजिक सदभाव, लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरुकता और सामाजिक सहयोग को बढ़ावा देता है।

शब्द कुंजीः अभियान, बनारस, स्वच्छता, महात्मा गांधी, शिक्षा, सामाजिक, जागरूकता, सदभाव, राजनीति।

उपकल्पनाः

- स्वच्छ भारत अभियान का जुड़ाव गांधीजी से है।
- स्वच्छ भारत अभियान से भारत स्वच्छ हो रहा है।
- स्वच्छ भारत अभियान के जरिए राजनीतिक हित साधने का प्रयास किया जा रहा है।
- स्वच्छ भारत अभियान से लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरुकता आ रही है।
- स्वच्छ भारत अभियान के कारण वाराणसी के लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरुकता बढ़ी है।

उद्देश्यः

अध्ययन को स्वरूप प्रदान करने के लिए कुछ उद्देश्य तय किए गए हैं जो इस प्रकार है–

- स्वच्छ भारत अभियान में गांधी दृष्टिकोण का अध्ययन।
- स्वच्छता भारत अभियान से लोगों में आई जागरुकता के मनोविज्ञान का अध्ययन।
- स्वच्छ भारत अभियान में वर्तमान सरकार की भूमिका का अध्ययन।
- स्वच्छ भारत अभियान से वाराणसी में स्वच्छता के प्रति आ रहे बदलाव का अध्ययन।

शोध प्रविधिः

प्रस्तुत शोध अध्ययन 'पर्यावरण जागरुकताः स्वच्छ भारत अभियान और गांधी दृष्टिकोण (एक कदम स्वच्छता की ओरः वाराणसी के विशेष संदर्भ में)' में शोध को ध्यान में रखते हुए निम्न पद्धतियों/उपकरणों का उपयोग किया गया है–

निदर्शन पद्धतिः शोध अध्ययन को स्वरूप देने के लिए उद्देश्यपरक निदर्शन के अंतर्गत वाराणसी शहर का चयन किया गया है। वाराणसी शहर के शहरी क्षेत्रों में रह रहे निवासियों का चयन निदर्शन के माध्यम से किया गया है।

शोध उपकरणः

प्रश्नावलीः अध्ययन को स्वरूप देने के लिए वाराणसी के शहरी क्षेत्रों में रह रहे लोगों से प्रश्नावली के माध्यम से उनी राय और विचारों को जानने का प्रयास किया गया है। तथ्य संकलन के लिए खुली और बंद प्रश्नावली का उपयोग किया गया है। प्रश्नावली के अंतिम प्रश्न के रूप में खुला प्रश्न रखा गया है जिसके माध्यम से प्रतिभागियों के विचारों को भी शोध में शामिल किया गया है।

अनुसूचीः कुछ लोगों के शैक्षिणक आधार को देखते हुए प्रश्नावली भरने में हो रही परेशानी के कारण उनसे राय और विचार जानने के लिए प्रश्नावली का उपयोग यहां अनुसूची के रूप में भी किया गया है। जिससे कुछ कम पढ़े लिखे लोगों के राय विचार को भी शोध हेतु शामिल किया गया है।

प्रस्तावना

मोक्ष नगरी काशी, बनारस या वाराणसी कई नामों से जाना जाने वाला यह शहर दुनिया के प्राचीनतम नगरों में से एक है। कहा जाता है कि काशी के कण–कण में भगवान शिव का वास है। गंगा के तट पर रचा–बसा यह शहर कालांतर से ही शिक्षा का केंद्र बना हुआ है। दुनिया भर से लोग काशी की महिमा को सुन कर इसे देखने आते हैं। वरुणा और अस्सी नदी के बीच में बसने के कारण इसका

Volume - 6 | Issue - 3 | December - 2016

नाम वाराणसी पड़ा। वाराणसी या काशी की चर्चा प्राचीन धार्मिक ग्रंथों में भी आसानी से देखने को मिल जाती है। बहुत से विद्वानों का मत है कि काशी अपना स्थान बदलती रहती है। कहा जाता है कि भगवान शिव ने काशी को पृथ्वी पर अपना निवास स्थान बनाया था और यह उनकी त्रिशूल पर टिकी हुई है। काशी को भारत की सांस्कृतिक राजधानी भी कहते हैं। यहां की सांस्कृतिक परम्पराएं अद्वितीय रूप से समृद्ध है जो भारत के किसी अन्य भाग में देखने को नहीं मिलती। यहां की बनारसी साड़ी देश में ही नहीं वरन विदेशों में भी चर्चित है। लाल, हरी और अन्य गहरे रंगों की ये साड़ियां हिंदू परिवारों में किसी भी शुभ अवसर के लिए आवश्यक मानी जाती हैं। उत्तर भारत में अधिकांश बेटियां बनारसी साड़ी में ही विदा की जाती हैं। बनारसी साड़ियों की कारीगरी सदियों पुरानी है। बनारस का पान भी अपने आप में एक प्रसिद्धि को समेटे हुए है इसकी भी चर्चा सुदूर विदेशों तक होती है। काशी गायन और वाद्य दोनों ही विधाओं का केंद्र रहा है। शास्त्रीय संगीत का यहां पर अद्भुत आनंद लिया जा सकता है। काशी ने इन विधाओं से पुष्ट बहुत से विद्वानो को दिया है।

मूल काशी विश्वनाथ मंदिर बहुत छोटा था। 18वीं शताब्दी में इंदौर की रानी अहिल्या बाई होल्कर ने इसे भव्य रूप प्रदान किया। पंजाब के शासक राजा रंजीत सिंह ने 1835 ई. में इस मंदिर के शिखर को सोने से मढ़वाया था। इस कारण इस मंदिर का एक अन्य नाम गोल्डेन टेम्पल भी पड़ा। यह मंदिर कई बार ध्वस्त किया गया। वर्तमान में जो मंदिर है उसका निर्माण चौथी बार हुआ है। कुतुबुद्दीन ऐबक ने सर्वप्रथम इसे 1194 ई. में ध्वस्त किया था। रजिया सुल्तान (1236–1240) ने इसके ध्वंसावशेष पर रजिया मस्जिद का निर्माण करवाया था। इसके बाद इस मंदिर का निर्माण अभिमुक्तेनश्वयर मंदिर के नजदीक बनवाया गया। बाद में इस मंदिर को जौनपुर के राजाओं ने तुड़वा दिया। 1490 ई. में इस मंदिर को सिकंदर लोदी ने ध्वंस करवाया था। 1585 ई. में बनारस के एक प्रसिद्ध व्यापारी टोडरमल ने इस मंदिर का निर्माण करवाया। 1669 ई. में इस मंदिर को औरंगजेब ने पुनः तुड़वा दिया। औरंगजेब ने भी इस मंदिर के ध्वंसावशेष पर एक मस्जिद का निर्माण करवाया था। इन सब के बावजूद आज भी वाराणसी को वाराणसी बनाने वाला यह मंदिर बना रहा। इसके पीछे कई कारण हैं। वाराणसी को घाटों का शहर भी कहते हैं जिसका एक कारण यहां पर सौ से अधिक घाटों का होना भी है।

आज काशी की चर्चा स्वच्छता अभियान की दृष्टि से इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि वर्तमान स्वच्छता अभियान के प्रणेता और भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का संसदीय क्षेत्र भी वाराणसी ही है। श्रद्धा का केंद्र होने के नाते देशभर से लाखों लोग वाराणसी आते हैं और जहां लोगों का आवागमन रहता है वहां गंदगी न हो ये हो ही नहीं सकता। हां उसे साफ जरूर किया जा सकता है। वाराणसी के घाटों की तस्वीर कुछ इसी तरह की है। मोदीजी ने उसे साफ करने का बीड़ा उठाया तो बहुत से नेता अभिनेता उनके साथ झाड़ू लेकर साथ आ गए। सड़कों और नदियों से कचरा निकाला गया और घाटों को साफ किया गया। हर तरफ सफाई हो गई पर कितने दिन यह सवाल हमेशा ही कचोटने वाला है। लोग नदियों में प्लास्टिक से बनी अनेक सामग्रियों का विसर्जन कर रहें हैं जिससे नदियों का अस्तित्व ही खतरे में आ गया है। काशी को 'महाशमशान' के नाम से भी जाना जाता है। इसे पृथ्वी की सबसे बड़ी शमशान भूमि भी कहा जाता है। यहां के मणिकर्णिका घाट तथा हरिश्चंद्र घाट को सबसे पवित्र घाट माना जाता है। यही कारण है कि मरणोपरांत मृत शरीर को अंत्येष्टि के लिए लोग यहां पर ले आते हैं जिससे यहां पर गंदगी का आलम बरकरार रहता है। लोगों को धार्मिक मान्यताओं के साथ–साथ साफ–सफाई ही जीवन का मूल मंत्र है इसे कदापि नहीं भूलना चाहिए। वाराणसी नगर से प्रतिदिन लगभग 35 करोड़ लीटर मल एवं 425 टन कूड़ा निकलता है। कूड़े का निष्कासन कई स्थलों पर किया जाता है और साथ ही बड़ी मात्रा में मल निकास गंगा नदी में किया जाता है। जिसे तत्काल प्रभाव से रोकने की जरूरत है।

ऐतिहासिक आलेखों से प्रमाणित होता है कि ईसा पूर्व की छठी शताब्दी में वाराणसी भारत का बड़ा ही समृद्धशाली और महत्त्वपूर्ण राज्य था। मध्य युग में यह कन्नौज राज्य का अंग था और बाद में बंगाल के पाल नरेशों का इस पर अधिकार हो गया था। सन् 1194 में मोहम्मद गोरी ने इस नगर को लूटा और क्षति पहुंचायी। मुगल काल में इसका नाम बदल कर मुहम्मदाबाद रखा गया। बाद में इसे अवध दरबार के प्रत्यक्ष नियंत्रण में रखा गया। बलवंत सिंह ने बक्सर की लड़ाई में अंग्रेजों का साथ दिया और इसके उपलक्ष्य में वाराणसी को अवध दरबार से स्वतंत्र कराया। सन् 1911 में अंग्रेजों ने महाराज प्रभुनारायण सिंह को वाराणसी का राजा बना दिया। सन् 1950 में यह राज्य स्वेच्छा से भारतीय गणराज्य में शामिल हो गया। वाराणसी विभिन्न मत–मतान्तरों की संगम स्थली रही है। विद्या के इस पुरातन और शाश्वत नगर ने सदियों से धार्मिक गुरुओं, सुधारकों और प्रचारकों को अपनी ओर आकृष्ट किया है। भगवान बुद्ध और शंकराचार्य के अलावा रामानुज, वल्लभाचार्य, संत कबीर, गुरु नानक, तुलसीदास, चैतन्य महाप्रभु, रैदास आदि अनेक संत इस नगरी में आए।

वाराणसी भारत की गौरवशाली संस्कृति का उद्गम तथा परंपराओं, इतिहास, संस्कृति और समरसता का संगम स्थल है। यह संकट मोचन मंदिर की मंगल भूमि है। यह धरा दुनिया भर के लोगों को आकर्षित करती है, जो यहां शांति और मोक्ष की तलाश में आते हैं। सारनाथ में ही गौतम बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त करने के बाद अपना प्रथम धर्मोपदेश दिया था। वाराणसी पूज्यनीय संत रविदास की जन्मस्थली है। बनारस में ही महात्मा कबीर का भी जन्म हुआ, परवरिश हुई और यहीं से उन्होंने अपने ज्ञान का प्रसार दुनिया भर में फैलाया। मिर्जा गालिब ने बनारस को 'काबा–ए–हिंदुस्तान' और 'चिराग–ए–दौर' यानि दुनिया की रोशनी कहा था। जब पंडित मदन मोहन मालवीय को शिक्षण केंद्र की स्थापना के लिए स्थान का चयन करना था, तो उन्होंने बनारस को ही चुना। गंगा–जमुनी तहजीब के महान दूत उस्ताद बिस्मिल्लाह खान का जिक्र किये बिना वाराणसी का परिचय अधूरा सा लगता है। वाराणसी के लिए मार्क ट्वेन के शब्द हैं 'वाराणसी इतिहास से भी पुरातन है, परंपराओं से भी पुराना है, वाराणसी और यहां के लोगों में कुछ तो खास है। इस देवभूमि का हर निवासी अपने अंदर कहीं न कहीं देवत्व लिए हुए हैं। वाराणसी हजारों वर्षों से ज्ञान, शिक्षा और संस्कृति का प्रतीक रही है। यह शिव की नगरी है। शिव जो विभिन्न संस्कृतियों के बीच समन्वय सेतु हैं। शिव जो संसार को बुराइयों से बचाने के लिए खुद विष पीकर नीलकंठ कहलाते हैं।

Volume - 6 | Issue - 3 | December - 2016

यह माना जाता है कि ये वाराणसी ही है जहां गंगा मां का सौंदर्य और महत्व उस उच्चतम स्तर को प्राप्त कर लेता है जहां गंगा का दर्शन मात्र ही मुक्ति का माध्यम बन जाता है। पर आज यही मोक्षदायिनी गंगा स्वयं अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही है। हम गंगा नदी में नये प्राण भरने के प्रयास कर रहे हैं और इस पवित्र नदी के पुनरोद्धार के लिए बहुआयामी तरीके से कार्रवाई शुरू की गई है।

वाराणसी गंगा–जमुनी संस्कृति का सबसे बड़ा केंद्र भी है। हिंदू धर्म में तो ये सर्वाधिक पवित्र शहर माना ही जाता है, लेकिन ये शहर जैन और बौद्ध धर्म में भी काफी महत्व रखता है। गौतम बुद्ध ने अपना पहला प्रवचन पास ही सारनाथ में दिया था। भारत रत्न बिस्मिल्ला खान की शहनाई की गूंज भी हिंदू–मुस्लिम एकता का ऐलान यहीं पर करती रही है। परिणामतः वाराणसी आज आध्यात्मिक ज्ञान की दुनिया का सबसे बड़ा केंद्र है। भगवान विश्वनाथ के आशीर्वाद के साथ बहुमूल्य विरासत से प्रेरणा लेकर हम वाराणसी के वैभवशाली भविष्य के निर्माण के लिए निकल पड़े हैं। वैसे भी वाराणसी ही ऐसी जगह है जहां गंगा उत्तर वाहिनी हैं। शक्तिशाली गंगा की धारा भी यहां आकर अपनी दिशा बदल कर मुड़ जाती है। इसलिए अब वाराणसी से ही बड़े परिवर्तन की शुरुआत होगी। देश सुशासन के पथ पर बढ़ रहा है और वाराणसी से निकला यह संदेश पूरे देश में अलख जगाएगा। बनारस पर्यटन का बहुत बड़ा केंद्र होने के साथ ही अपनी हस्त–शिल्प कारीगरी के लिए विश्व–विख्यात है। आज आवश्यकता है कि वाराणसी की समृद्ध विरासत को पुनरुद्धार करें। यहां के कुटीर उद्योगों के साथ ही हस्तशिल्प और हथकरघा व्यवसाय को पुनर्जीवित करें। यहीं पर रोजगार का सृजन करें। ऐसा करके हम हजारों लोगों को न केवल उनके घर के नजदीक ही रोजगार दे सकेंगे बल्कि वाराणसी को उसका पुराना गौरव भी लौटा सकेंगे।

वाराणसी की गौरवशाली सभ्यता और संस्कृति को यहां फैली गंदगी धूमिल कर देती है आस–पास फैली इस गंदगी से यहां के रहवासियों के साथ–साथ देशी तथा विदेशी पर्यटकों को भी काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। इससे काफी बीमारियां फैल रही है। इन बीमारियों और स्वास्थ्य संबंधी समस्यायों को देखते हुए मोदी सरकार ने स्वच्छता अभियान की शुरुआत की है। इसी कड़ी में मोदीजी ने बनारस में 7 नवंबर 2014 को पंडितों की मौजूदगी में पूरे विधि–विधान से गंगा की पूजा की इसके बाद फावड़ा उठाकर उन्होंने मिट्टी हटाकर अपने स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत वाराणसी में की। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गंगा नदी के अस्सी घाट की सफाई के बाद कहा, 'आज यह घाट की सफाई का काम शुरू किया है मुझे यहां के सामाजिक संगठनों ने विश्वास दिलाया है कि एक महीने में पूरा घाट साफ कर दिया जाएगा। कुछ वर्षों में अपने आप में सफाई के माध्यम से यह अच्छी सौगात होगी।'

प्रधानमंत्री मोदी ने दिल्ली के बाद यहां भी सफाई अभियान के लिए नौ लोगों को नॉमिनेट करते हुए कहा, जब मैंने दिल्ली में सफाई की थी तब भी नौ लोगों को नॉमिनेट किया था और आज भी कर रहा हूं उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री अखिलेश यादव, रामभद्राचार्य (चित्रकूट हैंडिकैप्ड यूनिवर्सिटी के फाउंडर), मनोज तिवारी (भोजपुरी गायक और बीजेपी सांसद), मनोज शर्मा (कृष्ण की आत्मकथा से प्रसिद्ध हुए), मोहम्मद कैफ (क्रिकेटर), पद्मश्री से सम्मानित प्रोफेसर देवीप्रसाद द्विवेदी, राजू श्रीवास्तव (एक्टर और कॉमेडियन), सुरेश रैना (क्रिकेटर) और कैलाश खेर (सिंगर)। मोदीजी ने आगे सभी वाराणसी निवासियों और यहां आने–वाले पर्यटकों से अपील की है कि वे इस शहर को स्वच्छ रखने और स्वच्छ करने में अपना अधिक से अधिक समय दें ताकि यह तीर्थ स्थल स्वच्छ रह सके।

तथ्य विश्लेषण एवं आंकड़ों का प्रस्तुतिकरणः

प्रस्तुत शोध पर्यावरण जागरुकताः स्वच्छ भारत अभियान और गांधी दृष्टिकोण (एक कदम स्वच्छता की ओरः वाराणसी के विशेष संदर्भ में) के अध्ययन के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि वाराणसी में स्वच्छता अभियान की स्थिति, इसकी लोकप्रियता और कार्य पद्धति को केंद्र में रखा गया है।

तथ्यों और आंकड़ों को जानने के लिए प्रश्नावली/अनुसूची के माध्यम से एकत्रित कर उनका विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत शोध वाराणसी शहरी क्षेत्र में रहने वाले प्रतिभागियों पर विशेष रूप से केंद्रित है। अध्ययन में 18 वर्ष से अधिक उम्र के महिला एवं पुरुष प्रतिभागियों को शामिल किया गया है जिनसे विषय से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई है। तथ्य संकलन हेतु चार सौ से अधिक प्रश्नावली/अनुसूची को भरवाया गया है लेकिन तथ्य विश्लेषण में 400 प्रतिभागियों के मतों को शामिल किया गया है।

प्रश्नावली में कुल 12 प्रश्नों को शामिल किया गया है। प्रश्नावली में बहुविकल्पीय प्रश्नों के माध्यम से प्राप्त तथ्यों को अध्ययन हेतु केंद्र में रखा गया है। प्रश्नावली में विकल्प के रूप में हां, नहीं और थोड़ा–बहुत को तथ्य संकलन हेतु आधार बनाया गया है। प्रश्नावली का अंतिम प्रश्न खुला रखा गया है। जिसमें प्रतिभागियों से विषय से संबंधित विचार एवं सुझाव लिए गए हैं। प्रस्तुत शोध में प्रश्नावली के कुल 12 प्रश्नों में से कुछ उपयोगी प्रश्नों/तथ्यों का चित्रमय प्रस्तुतीकरण किया गया है। जो इस प्रकार है–

प्रश्न.1. क्या स्वच्छ भारत अभियान गांधी के सपनों को साकार करने का प्रयास है? प्रश्न के संदर्भ में सबसे ज्यादा 91.25 प्रतिशत आंकड़े यह दर्शाते हैं कि स्वच्छ भारत अभियान गांधी के सपनों को साकार करने का प्रयास है वहीं 6.5 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि यह अभियान गांधी के सपनो को साकार करने का असफल प्रयास है। 2.25 प्रतिशत प्रतिभागी पता नहीं के पक्ष में अपना मत देते हैं। प्राप्त तथ्यों के अनुसार यह कहा जा सकता है कि सरकार गांधी के नाम पर जनमानस में अपनी राजनीतिक छवि को बेहतर बनाने का प्रयास कर रही है।

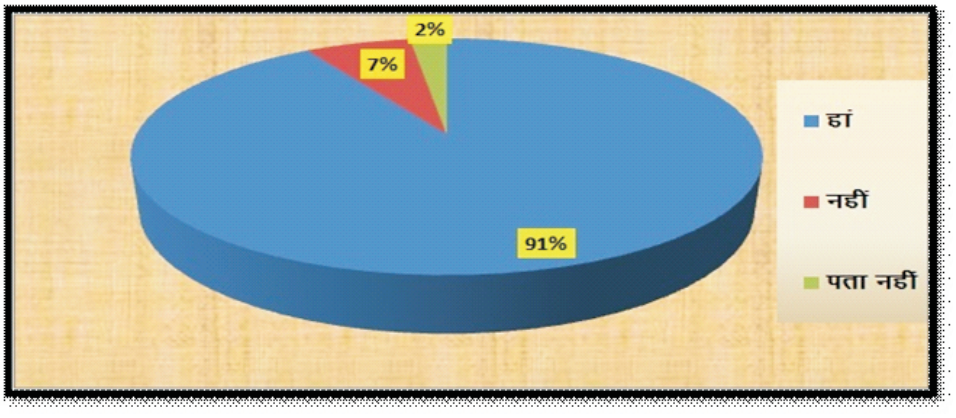

Volume - 6 | Issue - 3 | December - 2016

प्रश्न.2. स्वच्छ भारत अभियान में गांधी को जोड़ने के पीछे सरकार का क्या उद्देश्य है?
उक्त प्रश्न के संदर्भ में सबसे ज्यादा मत 36.25 प्रतिशत स्वच्छता के प्रति जागरुक करना, 30.75 प्रतिशत मत गांधी के विचारों को अमल करना, 24.25 प्रतिशत मत विश्व पटल पर भारत की स्वच्छ छवि का निर्माण और सबसे कम 8.75 प्रतिशत मत राजनीतिक लाभ के उद्देश्य से जोड़कर अभियान को देखते हैं। आंकड़ों पर गौर करें तो स्पष्ट होता है कि यह अभियान जहां स्वच्छता के प्रति जागरुक करने में सफल है वहीं कुछ लोग इस अभियान के अन्तर्गत गांधी के विचारों को भी अमल कर रहे हैं। यह अभियान अपने उद्देश्यों में सफल होता प्रतीत हो रहा है।

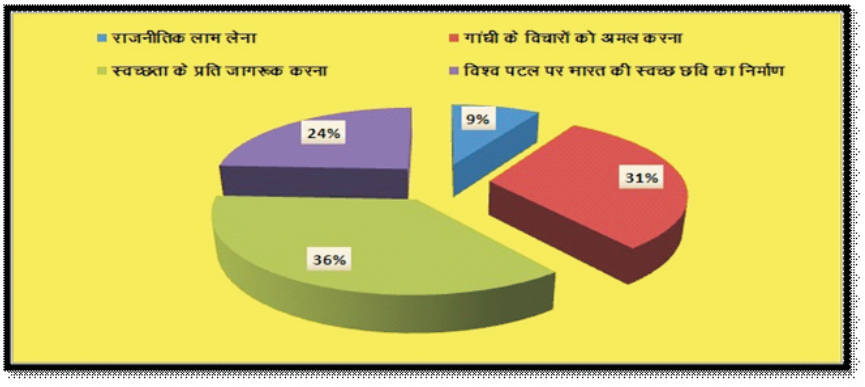

प्रश्न.3. क्या आपको लगता है कि स्वच्छ भारत अभियान लोगों में जागरुकता लाने में सफल हो रहा है? के उत्तर में 79.5 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि यह अभियान लोगों में जागरुकता लाने में सफल है जबकि केवल 16 प्रतिशत लोगों ने इस अभियान को जागरुक करने में असफल बताया। 4.5 प्रतिशत प्रतिभागियों ने पता नहीं को मत दिया। आंकड़ों के आधार पर देखें तो यह अभियान पूरी तरह से लोगों में जागरुकता लाने में सफल है।

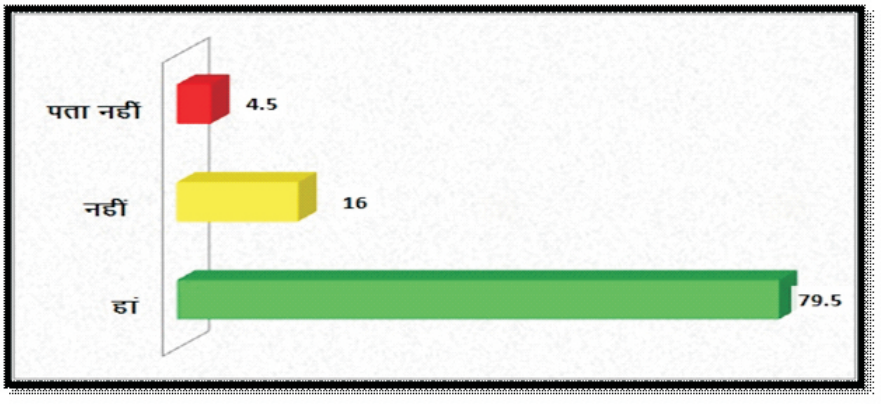

प्रश्न.4. क्या आप स्वच्छ भारत अभियान से जुड़े हैं? के जबाब में 85.75 प्रतिशत प्रतिभागियों ने हां में मत दिया। जबकि केवल 14.25 प्रतिशत ने नहीं में मत दिया। प्राप्त मत यह साबित करते हैं कि अभियान की पहुंच लगभग लोगों तक है।

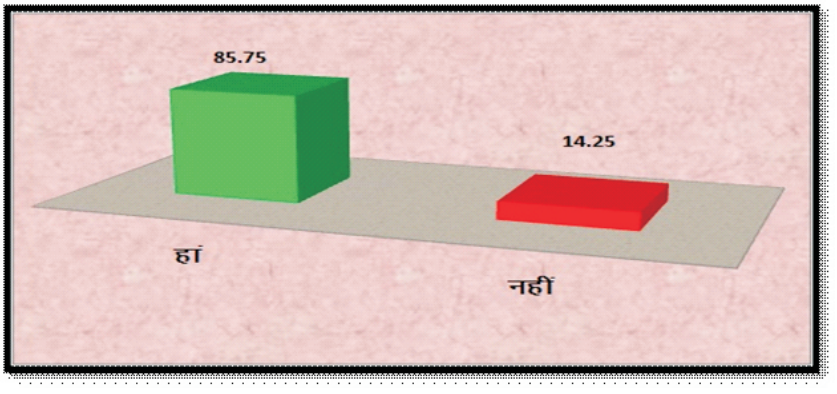

प्रश्न.5. स्वच्छ भारत अभियान से आप किस प्रकार जुड़े है? प्रश्न के संदर्भ में सबसे ज्यादा मत 74.25 प्रतिशत प्रतिभागी आसपास के वातावरण को स्वच्छ करने के लिए स्वच्छता अभियान से जुड़े हैं वहीं प्रचार प्रसार के लिए 19.5 प्रतिशत, राजनीतिक कारणों से 2 प्रतिशत, छवि निर्माण हेतु 2.5 प्रतिशत एवं किसी के दवाब में आकर 1.75 प्रतिशत लोग इस अभियान से जुड़े हुए हैं। यह अभियान भारत को स्वच्छ और निर्मल बनाने का एक प्रयास है।

Volume - 6 | Issue - 3 | December - 2016

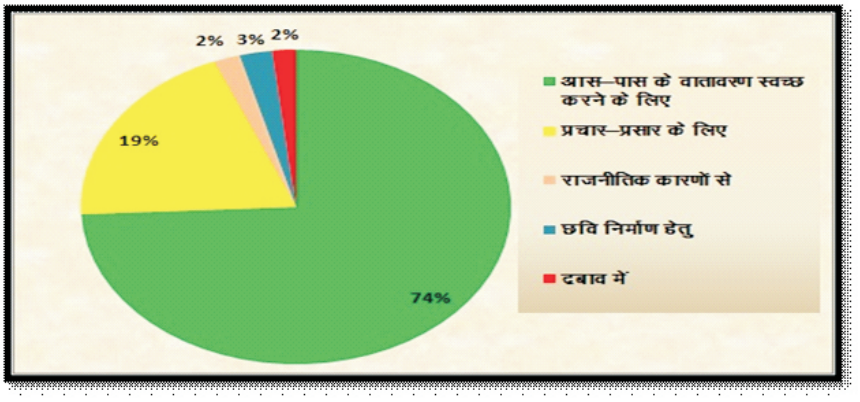

प्रश्न.6. क्या स्वच्छ भारत अभियान के बाद से लोगों में गंदगी फैलाने वालों के प्रति विरोध का स्वर बढ़ा है? के जबाव में सबसे ज्यादा 73.75 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि स्वच्छ भारत अभियान के बाद से लोगों में गंदगी फैलाने वालों के प्रति विरोध का स्वर बढ़ा है वहीं 20 प्रतिशत प्रतिभागियों ने नहीं के पक्ष में अपना मत दिया और पता नहीं होने के पक्ष में 6.25 प्रतिशत लोगों ने अपना मत दिया। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार यह कहा जा सकता है कि स्वच्छ भारत अभियान के बाद से लोगों में गंदगी फैलाने वालों के प्रति विरोध का स्वर बढ़ा है। यह देश और समाज के लिए हितकर है।

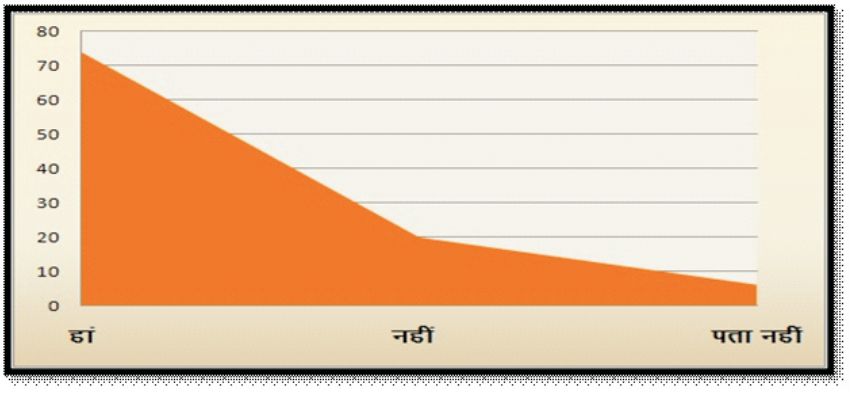

प्रश्न.7. क्या आप स्वच्छता के नियमों का पालन स्थान विशेष के आधार पर करते हैं?
59.5 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि वे स्वच्छता के नियमों का पालन स्थान विशेष के आधार पर करते हैं वहीं 38.25 प्रतिशत लोगों का मानना है कि वे स्वच्छता के नियमों का पालन स्थान विशेष के आधार पर नहीं करते हैं जबकि 2.25 प्रतिशत लोगों ने पता नहीं के पक्ष में अपना मत दिया। आंकड़े यह दर्शाते हैं कि भारत में अभी भी ज्यादातर लोग स्वच्छता के नियमों का पालन स्थान विशेष के आधार पर करते हैं।

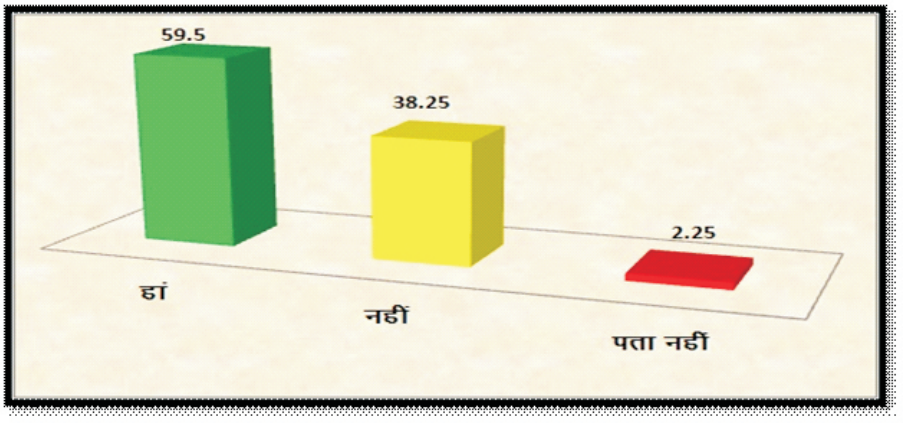

प्रश्न.8. क्या स्वच्छ भारत अभियान के बाद से गंदगी से होने वाली बीमारियों में कमी आई है?
उक्त प्रश्न के संदर्भ में सबसे ज्यादा 75 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि स्वच्छ भारत अभियान के बाद से गंदगी से होने वाली बीमारियों में कमी आई है वहीं 25 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि स्वच्छ भारत अभियान के बाद से गंदगी से होने वाली बीमारियों में कमी नहीं आई है। प्राप्त आंकड़े यह साबित करते हैं कि स्वच्छ भारत अभियान के बाद से गंदगी से होने वाली बीमारियों में कमी आई है।

Volume - 6 | Issue - 3 | December - 2016

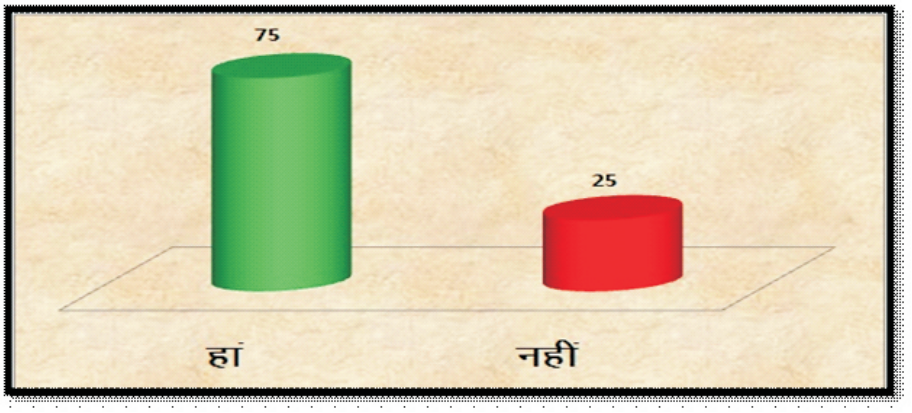

प्रश्न.9. स्वच्छ भारत अभियान के बाद से स्वच्छता हेतु सामाजिक सहयोग बढ़ रहा है?
उक्त प्रश्न के संदर्भ में 86.75 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि स्वच्छ भारत अभियान के बाद से स्वच्छता हेतु सामाजिक सहयोग बढ़ रहा है वहीं 13.25 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि इसके बाद भी स्वच्छता हेतु सामाजिक सहयोग नहीं बढ़ा है। आंकड़े यह दर्शाते हैं कि स्वच्छ भारत अभियान के बाद से लोगों में स्वच्छता हेतु सामाजिक सहयोग बढ़ रहा है।

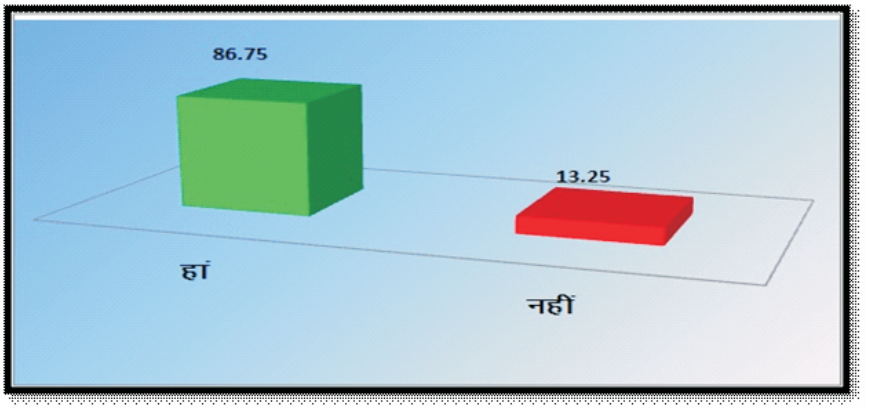

प्रश्न.10. आप स्वच्छता अभियान में एक महीने में कितना समय देते हैं?
के उत्तर में सबसे ज्यादा 62.5 प्रतिशत प्रतिभागी 1 से 3 घंटा, 24.75 प्रतिशत प्रतिभागी 3 से 6 घंटा, 1.5 प्रतिशत मत 6 से 9 घंटे में मत प्राप्त होते हैं एवं 11.25 प्रतिशत प्रतिभागी 9 घंटा से अधिक स्वच्छता अभियान में एक महीने में समय देते हैं। आंकड़े यह साबित करते हैं कि स्वच्छता अभियान में ज्यादातर लोग 1 से 3 घंटे का समय एक महीने में देते हैं।

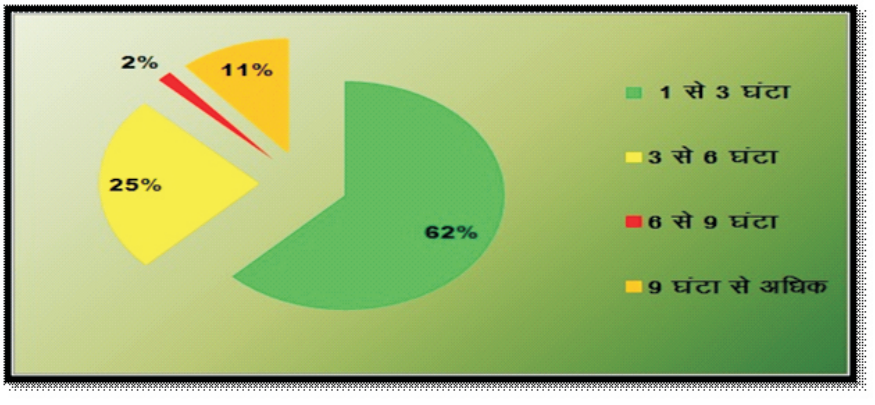

प्रश्न.11. स्वच्छ भारत अभियान में जानी–मानी हस्तियों (अमिताभ बच्चन, सचिन तेंदुलकर, मुकेश अंबानी इत्यादि) के जुड़ने से इस अभियान में लोगों का जुड़ाव बढ़ा है? उक्त प्रश्न के संदर्भ में 85 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि स्वच्छ भारत अभियान में जानी–मानी हस्तियों के जुड़ने से लोगों का जुड़ाव बढ़ा है वहीं 15 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि जानी–मानी हस्तियों के जुड़ने से स्वच्छता अभियान में लोगों का जुड़ाव नहीं बढ़ा है। आंकड़े यह दर्शाते हैं कि स्वच्छ भारत अभियान में जानी–मानी हस्तियों के जुड़ाव से इस अभियान में लोगों का जुड़ाव बढ़ा है।

Volume - 6 | Issue - 3 | December - 2016

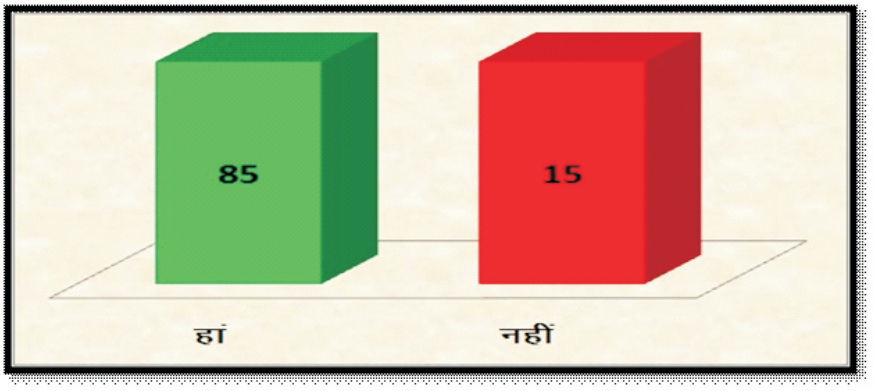

प्रश्न. 12. स्वच्छ भारत अभियान पर अपने विचार दें?
स्वच्छ भारत अभियान के बारे में ज्यादातर प्रतिभागियों ने विचार देते हुए कहा कि यह अभियान सफलता की सौगात लिख रहा है। कुछ समय पहले का बनारस और आज के बनारस में काफी अंतर देखने को मिल रहा है। प्रतिभागियों ने यह भी बताया कि स्वच्छता अभियान के प्रति लोगों में जागरुकता बढ़ी है। कई लोगों ने बनारस के गंगा घाटों की बात करते हुए कहा कि स्वच्छता अभियान के कारण गंगा घाटों की तस्वीर बदलती हुई दिखाई पड़ती है। लोगों का मनोविज्ञान धीरे–धीरे बदल रहा है। बनारस स्वच्छता की ओर बढ़ रहा है। कुछ प्रतिभागियों ने स्वच्छता अभियान को राजनीतिक दृष्टि से देखते हुए कहा कि यह अभियान गांधीजी का अभियान नहीं बल्कि बीजेपी का अभियान है। स्वच्छता अभियान के साथ बीजेपी राजनीतिक लाभ भी ले रही है। नरेंद्र मोदी के आगमन के समय बनारस की तस्वीर बदल जाती है और मोदीजी के जाने के बाद ही पहले वाली काशी और बनारस बन जाती है। तब स्वच्छता अभियान कहां चला जाता है। कुछ प्रतिभागियों ने मिली–जुली प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि यह अभियान स्वच्छता को दिशा दे सकती है लेकिन इसकी पहुंच अभी गावों तक नहीं बल्कि शहरों तक ही है।

निष्कर्षः

प्राप्त तथ्यों के अनुसार निम्नलिखित निष्कर्ष इस प्रकार हैं–

- 91.25 प्रतिशत लोगों का मानना है कि स्वच्छ भारत अभियान गांधी के सपनों को साकार करने जैसा है। यह अभियान साबित करता है कि गांधी के नाम से लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरुकता बढ़ी है।
- सबसे ज्यादा मत 36.25 प्रतिशत स्वच्छता के प्रति जागरुक करना, 30.75 प्रतिशत मत गांधी के विचारों को अमल करना, 24.25 प्रतिशत मत विश्व पटल पर भारत की स्वच्छ छवि का निर्माण और सबसे कम 8.75 प्रतिशत मत राजनीतिक लाभ के उद्देश्य से स्वच्छता अभियान को देखते हैं।
- 79.5 प्रतिशत लोगों का मानना है कि स्वच्छ भारत अभियान आमजन को जागरूक करने में सफल रहा है। आंकड़ों पर गौर करें तो दर्शाता है कि यह अभियान सफल रहा है।
- स्वच्छता अभियान में जुड़ने की बात पर 85.75 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि वे स्वच्छता अभियान से जुड़े हैं। आंकड़े यह दर्शाते हैं कि इस अभियान की पहुंच लगभग लोगों तक है।
- 74.25 प्रतिशत प्रतिभागी आसपास के वातावरण को स्वच्छ करने, प्रचार–प्रसार के लिए 19.5 प्रतिशत, राजनीतिक कारणों से 2 प्रतिशत, छवि निर्माण हेतु 2.5 प्रतिशत एवं किसी के दवाब में आकर 1.75 प्रतिशत लोग इस अभियान से जुड़े हुए हैं। आंकड़े यह साबित करते हैं कि सबसे ज्यादा 74.25 प्रतिशत प्रतिभागी आस–पास के वातावरण को स्वच्छ करने के उद्देश्य से जुड़े हैं।
- 73.75 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि स्वच्छ भारत अभियान के बाद से लोगों में गंदगी फैलाने वालों के प्रति विरोध का स्वर देखने को मिला है वहीं 75 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि स्वच्छता अभियान के बाद से गंदगी से होने वाली बीमारियों में कमी आई है।
- 86.75 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि स्वच्छ भारत अभियान के बाद से स्वच्छता हेतु सामाजिक सहयोग बढ़ा है। आंकड़े यह साबित करते हैं कि स्वच्छता अभियान के बाद से लोगों में सामाजिक सौहार्द भी बढ़ रहा है। स्वच्छता अभियान में 62.5 प्रतिशत प्रतिभागी 1 से 3 घंटे का समय प्रत्येक महीने देते हैं।
- 85 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि स्वच्छ भारत अभियान में जानी–मानी हस्तियों के जुड़ने से अभियान का प्रचार–प्रसार तेजी से हुआ। आमजन में जागरुकता फैलाने और उनको जोड़ने में भी जानी–मानी हस्तियों का महत्वपूर्ण योगदान है।

सुझावः

शोध अध्ययन में प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित सुझाव दिए जा रहे हैं–

- स्वच्छता अभियान को नियमित जारी रखने हेतु स्थानीय स्तर पर जिम्मेदारी तय करनी होगी।
- स्वच्छता अभियान के साथ–साथ लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरुकता फैलाएं।
- स्वच्छता अभियान से संबंधित नियमों को शहर, गांव के चौक–चौराहे पर लगवाना चाहिए। जिससे लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरुकता का भाव पैदा हो।
- स्वच्छता अभियान का प्रचार–प्रसार राजनीतिक स्तर से उपर उठकर करना होगा।
- स्वच्छता व्यक्तिगत नहीं सामाजिक जिम्मेदारी है इसके माध्यम से लोगों में सामाजिक सौहार्द्र विकसित करें।

शोध की उपयोगिता एवं भविष्य में शोधः

प्रस्तुत शोध 'पर्यावरण जागरुकताः स्वच्छ भारत अभियान और गांधी दृष्टिकोण (एक कदम स्वच्छता की ओरः वाराणसी के विशेष संदर्भ में)' में विषय के माध्यम से वर्तमान समय में स्वच्छता अभियान के प्रभाव और उसकी लोकप्रियता को दर्शाता है। शोध के माध्यम से यह ज्ञात करने का प्रयास

किया गया है कि वाराणसी में स्वच्छता अभियान की पहुंच कितनी है? आमजन में इसकी लोकप्रियता कैसी है? क्या स्वच्छता अभियान जैसे योजना से भारत स्वच्छ हो रहा है? या इस योजना के माध्यम से सरकार अपनी लोकप्रियता बढ़ा रही है आदि को परखना है। स्वच्छता अभियान के विस्तार के साथ–साथ अभियान में आमजन की भागीदारी और सरकार की नीतियों को भी दर्शाती है।

सहायक संदर्भ सूचीः

• Dash Dhanalaxmi, Satapathy Mahendra K., People Who Make a Change (Men and Women in Environmental Movements.

• R Rajeevan, Towards A Humane Environment Responsibilities of State, Role of Civil Society & Rights of Citizens, Gyan Books Pvt. Ltd. (Delhi, India).

• Das Arpana Dhar, Modern Environmental Ethics : A Critical Survey.

• B. Verma, Environmntal Pollution: An Introduction, Kunal Books Publishers

• चंदने, विलास, प्रकृति और मानव, दिल्लीः संदर्भ प्रकाशन, 2008, 81–88854–35–2.

• गुप्ता बंदना, नगर निगम की प्रबंधकीय व्यवस्था, वाराणसी, एक अध्ययन, पिल्ग्रिम्स पब्लिशिंग, ISBN 81–7769–7730, 2009.

• राउत, ताज, पर्यावरण, पर्यटन, एवं लोक संस्कृति, न्यू अकेडमिक पब्लिशर्स, 2007.

• सिंह डॉ अशोक कुमार, उत्तरप्रदेश के प्राचीनतम नगर, द्वितीय संस्करण, वाणी प्रकाशन, ISBN 81–8143–277–0, 2005.

• अस्थाना, डॉ. मधु, पर्यावरणः एक संक्षिप्त अध्ययन, मोतीलाल बनारसीदास, 2008.

• पर्यावरण तथा प्रदूषण, मध्यप्रदेश ग्रंथ अकादमी, 1982.

• पर्यावरण संरक्षण में गांधी की वैकल्पिक तकनीक, आरबीएसए पब्लिशर्स, 2008, 81–76113–69–7.

रिपोर्टः

• Climate change 2014: impacts, adaptation, and vulnerability-WHO

• Joint Statement issued at the conclusion of the, 22nd BASIC Ministerial Meeting on Climate Change, New Delhi, India, 7 April 2016

• Annual Report 2014-15, Government of India, Ministry of Environment, Forests and Climate Change.

बेवसाइट संदर्भः

1. http://www.epa.ie/&panel1-1
2. https://en.wikipedia.org/wiki/Swachh_Bharat_Abhiyan
3. http://cipet.gov.in/swachh.html#ad-image-22
4. https://gramener.com/swachhbharat/#?city=Varanasi
5. http://pmindia.gov.in/en/government_tr_rec/swachh-bharat-abhiyan-2/
6. http://india.gov.in/spotlight/swachh-bharat-abhiyaan-ek-kadam-swachhata-ki-ore
7. http://www.who.int/topics/environmental_pollution/en/
8. http://nmcnagpur.gov.in/
9. http://swachhbharaturban.gov.in/Whats_New.aspx
10. http://www.indiaenvironmentportal.org.in/category/10430/thesaurus/nasa/
11. http://www.environmentmagazine.org

फोटो संदर्भः

1.https://www.google.co.in/search?hl=en&site=imghp&tbm=isch&source=hp&biw=1366&bih=657&q=banaras+suach+bhart+abhiyan&oq=banaras+suach+bhart+abhiy.

2.https://www.google.co.in/search?hl=en&site=imghp&tbm=isch&source=hp&biw=1366&bih=657&q=banaras+suach+bhart+abhiyan&oq=banaras+suach+bhart+abhiya.

3.https://www.google.co.in/search?hl=en&site=imghp&tbm=isch&source=hp&biw=1366&bih=657&q=banaras+suach+bhart+abhiyan&oq=banaras+suach+bhart.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com